बत्तीस

भण्डारीपन

Stewardship

पूर्व के अध्याय में यीशु द्वारा दिये गए पहाड़ी उपदेश में, हमने यीशु द्वारा अपने शिष्यों को भण्डारीपन के विषय में बोले गए कथनों पर विचार किया था। उसने उनसे पृथ्वी पर अपना धन जमा न करने को कहा था, बल्कि स्वर्ग में। उसने अस्थायी खज़ानों में निवेश करनेवालों की मूर्खता को न केवल इंगित किया बल्कि उनके हृदयों में पाए जाने वाले अंधकार की ओर भी (देखें मत्ती 6:19-24)।

पृथ्वी पर धन जमा करनेवालों के लिए धन ही ईश्वर है, क्योंकि वे इसकी सेवा करते हैं और यह उनके जीवनों पर राज करता है। यीशु ने घोषित किया कि धन और परमेश्वर दोनों की सेवा करना असंभव है, स्पष्ट रूप में यह संकेत देते हुए कि यदि परमेश्वर हमारा सच्चा स्वामी है, तो वह हमारे धन का भी स्वामी है। *लोगों के मनों में परमेश्वर और धन के बीच प्रतिस्पर्धा रहती है।* इसी कारण यीशु ने हमें सिखाया कि जब तक हम अपना सब कुछ नहीं छोड़ देते हम उसके चेले नहीं बन सकते (देखें लूका 14:33)। मसीह के शिष्यों का अपना कुछ नहीं है। वे केवल परमेश्वर की चीज़ों के भण्डारी हैं, और परमेश्वर *अपने धन* के साथ उन चीज़ों को करना चाहता है जो *उसके* चरित्र और *उसके राज्य को प्रतिबिम्बित करें।*

यीशु को भण्डारीपन के बारे में अधिक कहना था, परन्तु ऐसा लगता है कि उसके वचनों की प्राय: उनके द्वारा उपेक्षा की जाती थी जो स्वयं को उसके अनुयायी कहते थे। इससे भी अधिक पवित्रशास्त्र को आधुनिकता में रखकर कई रूपों में प्रगट करना विख्यात हो गया है। शिष्य-निर्माता सेवक, तथापि, लोगों को मसीह की सभी आज्ञाओं का पालन करना सिखाता है। वह अपने कार्यों और शब्दों के द्वारा *बाइबल* के भण्डारीपन के विषय में सिखाता है।

पवित्रशास्त्र भण्डारीपन के बारे में जो सिखाता है, आइये उस पर विचार करें, और

उसी के साथ-साथ, सम्पन्नता के बारे में झूठी शिक्षाओं के सामान्य उदाहरणों को भी प्रगट करें। यह एक जोशीला अध्ययन होगा। मैंने इसी विषय पर एक पुस्तक को लिखा है जिसे हमारी वेबसाइट (shepherdserve.org) पर अंग्रेज़ी में पढ़ा जा सकता है। यह ''बाइबल के विषयों'' और ''धन पर यीशु'' जैसे सह-शीर्षकों में मिलती है।

आवश्यकताओं की पूर्ति करनेवाला

The Supplier of Needs

एक सकारात्मक टिप्पणी पर आरम्भ करते हुए, हम स्मरण रखें कि पौलुस ने पवित्र आत्मा की प्रेरणा से लिखा, ''और मेरा परमेश्वर भी अपने धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा (फिलि. 4:19)। इस परिचित प्रतिज्ञा को अक्सर मसीहियों द्वारा उद्धृत करने के साथ-साथ दावा भी किया जाता है, लेकिन इसके संदर्भ में क्या था? संदर्भ के साथ पढ़ने पर, हम जल्द ही इस कारण को जान पाएंगे कि पौलुस इस बारे में निश्चयी क्यों था कि परमेश्वर फिलिप्पी विश्वासियों की सभी आवश्कताओं को पूरा करेगा:

> तौभी, तुमने भला किया के *मेरे क्लेश में मेरे सहभागी हुए।* और हे फिलिप्पियो, तुम आप ही जानते हों, कि सुसमाचार प्रचार के आरम्भ में जब मैंने मकिदुनिया से कूच किया तब तुम्हें छोड़ और किसी मण्डली ने लेने देने के विषय में मेरी सहायता नहीं की। इसी प्रकार जब मैं थिस्सलुनीके में था, तब भी *तुमने मेरी घटी पूरी करने के लिये एक बार क्या वरन दो बार कुछ भेजा था।* यह नहीं कि मैं दान चाहता हूं परन्तु मैं ऐसा फल चाहता हूं, जो तुम्हारे लाभ के लिये बढ़ता जाए। मेरे पास सब कुछ है, वरन बहुतायत से भी है; *जो वस्तुएं तुमने इपफ्रुदीतुस के हाथ भेजी थी,* उन्हें पाकर मैं तृप्त हो गया हूं, वह तो सुगन्ध और ग्रहण करने के योग्य बलिदान हैं, जो परमेश्वर को भाता है। और मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा (फिलि. 4:14-19, पर बल दिया गया है)।

पौलुस इस बारे में निश्चिंत था कि यीशु निश्चय ही फिलिप्पियों की सारी आवश्यकताओं को पूरा करेगा क्योंकि उन्होंने यीशु की शर्त को पूरा किया था: उन्हें अपने त्यागपूर्ण दानों को पौलुस पर प्रमाणित करते हुए सर्वप्रथम परमेश्वर के राज्य की खोज करनी थी जिससे वह कलीसियाओं की स्थापना करना जारी रखे। स्मरण रखें कि अपने पहाड़ी उपदेश में यीशु ने कहा,

> क्योंकि तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है, कि तुम्हें ये सब वस्तुएं चाहिए। इसलिये पहले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी (मत्ती 6:32-33)।

अत: हम देखते हैं कि फिलिप्पियों 4:19 में पौलुस की प्रतिज्ञा उस प्रत्येक मसीही पर लागू नहीं होती है जो इसे उद्धृत करता या इसका दावा करता है। इसके विपरीत, यह केवल उन पर ही लागू होती है जो पहले परमेश्वर के राज्य की खोज करते हैं।

हमें वास्तव में किस चीज़ की ज़रूरत है?

What Do We Really Need?

मत्ती 6:32-33 में की गई यीशु की प्रतिज्ञा से हम और कुछ भी सीख सकते हैं। हमें कई बार अपनी आवश्यकताओं की पहचान करने में कठिनाई होती है। तथापि, यीशु ने बताया कि हमारी आवश्यकताएं क्या हैं। उसने कहा, ''तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सब चीज़ों की *ज़रूरत* है।''

वे कौन सी ''चीज़ें'' हैं जिनके बारे में यीशु बता रहा था कि वे उनके साथ जुड़ जाएंगी जो पहले उसके राज्य और धर्म की खोज करते हैं? वे भोजन, पानी और वस्त्र हैं। कोई भी इस पर बहस नहीं कर सकता, क्योंकि यीशु ने विचाराधीन प्रतिज्ञा के अन्तर्गत पहले यही कहा था (देखें मत्ती 6:25-31)। भोजन, पानी और वस्त्र ही केवल हमारी भौतिक ज़रूरते हैं। वे ही वास्तव में वे चीज़े हैं जो यीशु और उसके साथ यात्रा करने वाले शिष्यों के समूह की होती थीं।

पौलुस भी हमारी आवश्यकताओं के संबंध में यीशु के द्वारा दी गई परिभाषा से सहमत था, क्योंकि उसने तीमुथियुस को लिखा:

> पर संतोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है। क्योंकि न हम जगत में कुछ लाए हैं और न कुछ ले जा सकते हैं। *और यदि हमारे पास खाने और पहनने को हो, तो इन्हीं पर संतोष करना चाहिए।* पर जो धनी होना चाहते हैं, वे ऐसी परीक्षा, और फंदे और बहुतेरे व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं में फंसते हैं जो मनुष्यों को बिगाड़ देती हैं और विनाश के समुद्र में डुबा देती हैं। क्योंकि रुपये का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए कितनों ने विश्वास से भटककर अपने आप को नाना प्रकार के दुखों से छलनी बना दिया है (1तीमु 6:6-10, पर बल दिया गया है)।

पौलुस ने यह माना कि भोजन और वस्त्र की हमें भौतिक रूप से ज़रूरत है, नहीं तो उसने यह नहीं कहा होता कि हमें उन चीज़ों के साथ संतुष्ट रहना चाहिए। यह फिलिप्पियों के साथ की गई उसकी प्रतिज्ञा के संबंध में हमारा भिन्न रूप से नेतृत्व

करता है कि परमेश्वर उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करेगा। कुछ प्रचारक इस पद को विस्तृत करते हैं। इसके अतिरिक्त यदि हमें भोजन और वस्त्र से संतुष्ट रहना चाहिए तो क्यों हम उससे संतुष्ट नहीं है जो हमारे पास है जो कि भोजन और वस्त्र से अधिक है?

असंतुष्टि
Discontentment

हमारी समस्या है कि हम यह सोचते हैं कि जितना हम करते हैं हमें उससे अधिक की ज़रूरत है। इस सच्चाई पर ध्यान दें कि जब परमेश्वर ने आदम और हव्वा को बनाया था उनके पास अपना कुछ नहीं था, तौभी वे स्वर्ग में रह रहे थे। निस्संदेह, परमेश्वर हमसे हमारी भौतिक चीज़ों को एकत्रित करने की खुशी को छीनना नहीं चाहता। क्या आपने कभी इस सच्चाई पर ध्यान दिया कि यीशु ने एक बार भी कभी नल को नहीं खोला या स्नानघर में वह 'शावर' के नीचे नहीं खड़ा हुआ? उसने अपने वस्त्र कभी भी वाशिंग मशीन में नहीं धोए; उसने कभी भी रेफ्रिजरेटर के द्वार को नहीं खोला। उसने कभी भी एक कार या साइकिल को नहीं चलाया। न ही उसने कभी रेडियो को सुना, किसी से फोन पर बात की, न स्टोव पर भोजन पकाया, या सार्वजनिक प्रणाली के अनुसार प्रचार नहीं किया। उसने कभी भी वीडियो या टेलीविज़न कार्यक्रम को नहीं देखा। कभी भी बिजली के बल्ब को नहीं जलाया या एयर कंडीशनर के सामने बैठकर ठण्डी हवा नहीं ली। उसके पास हाथ में बांधने वाली घड़ी भी नहीं थी। उसके पास वस्त्रों से भरी अलमारी भी नहीं थी। वह कैसे खुश रह सका?

युनाइटेड स्टेट्स (और शायद आपके देश में भी) में हम पर विज्ञापनों की बमबारी की जाती है जो हमें दिखाती हैं कि लोग अपनी नई भौतिक चीज़ों के साथ कितने अधिक आनन्दित हैं। परिणामस्वरूप हमारे मस्तिष्क इस विचारधारा से दूषित हो जाते हैं कि खुशी अधिक प्राप्ति से आती है, और चाहे कितना भी अधिक हम क्यों न पा लें, हम कभी संतुष्ट नहीं होते। इसे यीशु ने ''धन का धोखा'' कहा (मत्ती 13:22)। भौतिक चीज़ें खुशी की प्रतिज्ञा देती हैं लेकिन बहुत कम ही अपनी प्रतिज्ञा को पूरा कर पाती हैं। और अधिक चीज़ों की प्राप्ति के लिए एक बार जब हम संसार की उन्मत्त दौड़ में जुड़ जाते हैं, तब हम मूर्तिपूजक और धनसंपत्ति के दास बन जाते हैं जिससे परमेश्वर तथा उसकी सबसे महत्वपूर्ण आज्ञा को भूल जाते हैं कि उसे अपने सारे मन से प्रेम करें तथा अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करें। परमेश्वर इस्राएल से भी यही चाहता था:

> इसलिये सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि अपने परमेश्वर यहोवा को भूलकर उसकी जो जो आज्ञा, नियम, और विधि मैं आज तुझे सुनाता हूं उनका मानना छोड़ दे; ऐसा न हो कि जब तू खाकर

> तृप्त हो, और अच्छे अच्छे घर बनाकर उनमें रहने लगे, और तेरी गाय, बैलों और भेड़-बकरियों की बढ़ती हो, और तेरा सोना, चांदी और तेरा सब प्रकार का धन बढ़ जाए, तब तेरे मन में अहंकार समा जाए, और तू अपने परमेश्वर यहोवा को भूल जाए, जो तुझको दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है (व्यवस्था. 8:11-14)।

इसी तरह से, यीशु ने चेतावनी दी कि ''धन का धोखा'' एक सच्चे विश्वासी के आत्मिक जीवन को रोक सकता है जो कि स्वयं को दूषित होने के लिए दे देता हो (देखें मत्ती 13:7, 22)। पौलुस ने चेतावनी दी कि ''रुपये का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है'', यह कहते हुए कि ''जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए कितनों ने विश्वास से भटककर अपने आप को नाना प्रकार के दुखों से छलनी बना लिया है'' (1तीमु. 6:10)। हमें इब्रानियों के लेखक द्वारा बताया गया है, ''तुम्हारा स्वभाव लोभ रहित हो, और जो तुम्हारे पास है, उसी पर संतोष करो; क्योंकि उसने आप ही कहा, 'मैं तुझे कभी न छोड़ूगा और न कभी तुझे त्यागूंगा''' (इब्रा. 13:5)। धन के खतरे के संबन्ध में यह केवल पवित्रशास्त्र की चेतावनी का एक नमूना है।

जब धन स्वामी होता है

When Money is Master

परमेश्वर के साथ हमारे संबंध को नापने के लिए धन से अच्छा बैरोमीटर और कोई नहीं हो सकता। धन जिसे प्राप्त करने के लिए हम समय और साधन लगा देते हैं, और इसे प्राप्त करने के बाद हम इसका क्या करते हैं– यही हमारे आत्मिक जीवनों को प्रगट करता है। धन, चाहे यह हमारे पास हो या न हो, परीक्षा को इस तरह से ईंधन देता है जैसे इसके समान और कोई नहीं है। धन आसानी से उस महान आज्ञा के विरोध में खड़ा हो सकता है क्योंकि यह परमेश्वर से ऊपर ईश्वर बन सकता है, और यह हमें अपने पड़ोसी से अधिक अपने से प्रेम करने को प्रेरित कर सकता है। दूसरी ओर, धन का प्रयोग परमेश्वर और हमारे पड़ोसी के प्रति हमारे प्रेम को प्रगट करने के लिए किया जा सकता है।

यीशु ने एक बार एक ऐसे व्यक्ति के बारे में दृष्टांत सुनाया जिसने स्वयं परमेश्वर के बजाय धन को शासन करने की अनुमति दी:

> किसी धनवान की भूमि में बड़ी उपज हुई। तब वह अपने मन में विचार करने लगा, कि ''मैं क्या करूं, क्योंकि मेरे यहां जगह नहीं, जहां अपनी उपज इत्यादि रखूं।'' और उसने कहा, ''मैं यह करूंगा: मैं अपनी बखारियां तोड़कर उनसे बड़ी बनाऊंगा; और

> वहां अपना सब अन्न और सम्पत्ति रखूंगा: और अपने प्राण से कहूंगा कि 'प्राण तेरे पास बहुत वर्षों के लिए बहुत सम्पत्ति रखी है, चैन कर, खा, पी, सुख से रह'।'' परन्तु परमेश्वर ने उससे कहा; ''हे मूर्ख, इसी रात तेरा प्राण तुझसे ले लिया जाएगा: तब जो कुछ तूने इकट्ठा किया है, वह किसका होगा?'' ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने लिये धन बटोरता है, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं (लूका 12:16-21)।

यीशु ने इस धनी व्यक्ति को मूर्ख व्यक्ति के रूप में चित्रित किया है। धन, ऊपजाऊ भूमि और खेती-बाड़ी में निपुण होने पर भी, वह परमेश्वर को नहीं जानता था, नहीं तो उसने इतना अधिक संचित नहीं किया होता और उसके बाद न ही वह एक स्वार्थी जीवन को जीता। इसके विपरीत, वह अपने धन से वह करता जो परमेश्वर को भाता है, यह जानते हए कि वह परमेश्वर का भण्डारी है। परमेश्वर, निस्संदेह चाहता था कि वह अपनी बहुतायत में से दूसरों को देते हुए कार्य करता रहे। खेती बाड़ी न करने और किसी आत्मनिर्भर सेवकाई को न करने का उसके पास केवल तब ही विकल्प होता जब परमेश्वर ने उसे ऐसा करने को कहा होता।

यीशु के दृष्टांत में धनी किसान ने अपनी मृत्यु के संबन्ध में सही गणना नहीं की। उसने यह माना कि अभी उसे कई वर्ष तक जीना है, जबकि वह अनन्तता से कुछ घंटों की दूरी पर ही था। यीशु के विषय में कोई गलती नहीं है: हमें प्रत्येक दिन को ऐसे जीना चाहिए मानो कि वह हमारा अन्तिम दिन हो, परमेश्वर के सम्मुख लेखा देने को सदैव तैयार रहते हुए।

दो दृष्टिकोण

Two Perspectives

परमेश्वर का दृष्टिकोण मनुष्य के दृष्टिकोण से कितना भिन्न है। यीशु के दृष्टांत का धनी मनुष्य उन कई लोगों का शत्रु रहा होगा जो उसे जानते थे, तौभी परमेश्वर ने उस पर दया की। वह मनुष्यों की दृष्टि में तो धनी था, लेकिन परमेश्वर की दृष्टि में दरिद्र था। वह स्वर्ग में अपना धन जमा कर सकता था, जहां यह सदा के लिये रहता, परन्तु उसने इसे पृथ्वी पर जमा करने का चयन किया, जहां पर मरने के बाद उसे इसका कोई लाभ नहीं मिलता। और यीशु ने लालची लोगों के बारे में जो सिखाया उसकी रोशनी में, यह अनुपयुक्त प्रतीत होता है कि यीशु यह चाहता था कि हम सोचें कि धनी मनुष्य मृत्यु के पश्चात् स्वर्ग जाएगा।

इस दृष्टांत की सहायता से हम सभी को यह स्मरण रखना चाहिए कि जो कुछ हमारे पास है वह परमेश्वर की ओर से एक उपहार है, और वह हमसे इसका भण्डारी होने की अपेक्षा करता है। यह केवल उन पर ही लागू नहीं होता जिनके पास भौतिक

सम्पत्ति है बल्कि उस प्रत्येक व्यक्ति पर भी जो भौतिक चीज़ों को महत्व देने की परीक्षा में पड़ता है। यीशु ने इसे अपने शिष्यों को बताते हुए स्पष्ट किया:

> इसलिये मैं तुम से कहता हूं (इसका अर्थ यह है कि जो कुछ वह कहने जा रहा था, वह उस पर आधारित था जो उसने कुछ समय पहले कहा था), अपने प्राण की चिन्ता न करो, कि हम क्या खाएंगे; न अपने शरीर की कि क्या पहनेंगे। क्योंकि भोजन से प्राण और वस्त्र से शरीर बढ़कर है। कौओं पर ध्यान दो, वे न बोते हैं, न काटते; तौभी परमेश्वर उन्हें पालता है, तुम्हारा मूल्य पक्षियों से कहीं अधिक है। तुममें से ऐसा कौन है, जो चिन्ता करने से अपनी अवस्था में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है? इसलिये यदि तुम सबसे छोटा काम भी नहीं कर सकते, तो और बातों के लिये क्यों चिन्ता करते हो? सोसनों के पेड़ों पर ध्यान करो कि वे कैसे बढ़ते हैं; वे न परिश्रम करते, न कातते हैं; तौभी मैं तुमसे कहता हूं, कि सुलैमान भी अपने सारे विभव में, उनमें से किसी एक के समान वस्त्र पहने हुए न था। इसलिये यदि परमेश्वर मैदान की घास को जो आज है, और कल भाड़ में झोंकी जाएगी, ऐसा पहनाता है, तो हे अल्पविश्वासियो, वह तुम्हें क्यों न पहनाएगा? और तुम इस बात की खोज में न रहो कि क्या खाएंगे और क्या पीएंगे, और न संदेह करो। क्योंकि संसार की जातियां इन सब वस्तुओं की खोज में रहती हैं; और तुम्हारा पिता जानता है, कि तुम्हें इन वस्तुओं की आवश्यकता है। परन्तु उसके राज्य की खोज़ में रहो, तो ये वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी। हे छोटे झुण्ड, मत डर; क्योंकि तुम्हारे पिता को यह भाया है कि तुम्हें राज्य दे।
>
> अपनी सम्पत्ति बेचकर दान कर दो; और अपने लिये ऐसे बटुए बनाओ, जो पुराने नहीं होते, अर्थात् स्वर्ग पर ऐसा धन इकट्ठा करो जो घटता नहीं और जिसके निकट चोर नहीं जाता और कीड़ा नहीं बिगाड़ता। क्योंकि जहां तुम्हारा धन है, वहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा (लूका 12:22-34)।

यीशु के शब्द आधुनिक ''सम्पन्नता के प्रचारकों'' के विरुद्ध कैसे खड़े होते हैं। आज हमें बताया जाता है कि परमेश्वर चाहता है कि हमारे पास अधिक हो, जबकि यीशु ने अपने शिष्यों को अपना सब कुछ बेचकर परापकारी कार्यों में देने को कहा पुन: उसने पृथ्वी पर अपना धन जमा करनेवालों की मूर्खता को प्रगट किया जहां पर इस धन का नाश ही होना है, तथा धन के स्वामी का मन भी उसी ओर लगता है।

इस पर भी ध्यान दें कि यीशु ने मूर्ख पर लागू होनेवाली शिक्षा को धर्मी उन पर भी लागू किया जिनके पास इतना कम है कि भोजन और वस्त्र के कारण परीक्षा में पढ़ते हैं। क्योंकि इन चीज़ों की चिन्ता हमें हमारे केन्द्र से हटाती है। यदि हम अपने पिता परमेश्वर पर अपनी देख-रेख किये जाने का भरोसा करें, जैसा हमें करना भी चाहिए, तो हम चिन्तित नहीं होंगे, और यह चिन्तामुक्त रवैया हमें परमेश्वर के राज्य के निर्माण की ओर केन्द्रित होने को स्वतंत्र करेगा।

मसीह का उदाहरण

Christ's Example

यीशु के पास धन के बारे में कहने को दूसरी बहुत सी चीज़ें थीं। तौभी, उसने सिखाया कि प्रत्येक शिष्य-निर्माता सेवक को अपने उदाहरण के द्वारा सिखाना चाहिए। उसने उसका प्रचार किया जो उसने स्वयं किया।

यीशु ने पार्थिव धन के लिए कार्य नहीं किया, बेशक वह अपनी स्थिति को दूषित कर आसानी से अत्यधिक धन अर्जित कर सकता था। बहुत से दान प्राप्त सेवकों की एक गलत धारणा है कि यदि उनकी सेवकाई धन की ओर आकर्षित होती है तो परमेश्वर ही उन्हें धनी करना चाहता है। तौभी, यीशु ने व्यक्तिगत लाभ के लिये अपने अभिषेक का प्रयोग नहीं किया। उसे जो धन दिया गया था उसका प्रयोग शिष्य बनाने में किया जाता था। उसने अपने साथ चलने वाले सहभागी समूहों की भी आवश्यकताओं को पूरा किया, जिन्हें उसने शिष्य बनाया था।[100] हमारे दिनों में, युवा शिष्य बाइबल स्कूल में बूढ़े सेवकों द्वारा भाषण को सुनते हैं। तौभी, यीशु का तरीका इसके विपरीत था।

यीशु ने एक भरोसे का जीवन भी जीया कि उसका पिता उसकी सारी आवश्यकताओं को पूरा करेगा और दूसरों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उसे आशीषित भी करेगा। कई बार उसे भोजनालयों में भोजन के लिये आमंत्रित किया जाता था, और कई बार हम उसे खेतों में खड़े कच्चा अनाज खाते हुए पाते हैं (देखें लूका 6:1)।

दो अवसरों पर उसने उन हज़ारों लोगों के लिये भोजन का प्रबन्ध किया जो उसकी सुनने आए थे। यह उन आधुनिक मसीही सभाओं से कितना भिन्न है, जहां प्रत्येक सुननेवाले को प्रवेश शुल्क देना पड़ता है। जो सेवक ने सभा में आनेवाले लोगों के लिये भोजन का प्रबन्ध करते हैं उनका प्रायः इस तरह से ठट्ठा किया जाता है ''लोगों को सुनाने के लिए भुगतान किया जा रहा है।'' वास्तव में, हम यीशु के उदाहरण का अनुसरण कर रहे हैं।

100. सम्पन्नता प्रचारक इस सच्चाई का प्रयोग सामान्यता यह प्रमाणित करने को करते हैं कि परमेश्वर ने यीशु की आवश्यकताओं को पूरा किया तभी वह अपने कार्य को पूरा कर सका था। यीशु और सम्पन्नता प्रचारकों के बीच पाई जानेवाली भिन्नता है कि यीशु स्वार्थी नहीं था, उसने सेवकाई के धन का प्रयोग स्वयं को ऊंचा उठाने में नहीं किया था।

यीशु ने दरिद्रों की भी चिन्ता की, क्योंकि उसका समूह एक ऐसा धन-डिब्बा अपने पास रखता या जिसमें से वितरण किया जाता था। दरिद्रों को देना यीशु की सेवकाई का एक नियमित चलन था कि जब उसने यहूदा को अन्तिम भोज के समय जाने को कहा कि जो करना है वह उसे जल्दी करे, तब अन्य सभी शिष्यों ने यह समझा कि यहूदा या तो समूह के लिए भोजन लेने जा रहा है या फिर दरिद्रों के लिये धन लेने को (देखें यूह. 13:27-30)।

यीशु ने अपने पड़ोसी से सच में अपने समान प्रेम किया और इसी तरह से उसने सरल जीवन व्यतीत करते हुए दूसरों के साथ चीज़ों को बांटा। उसे यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के प्रचार पर पश्चात्ताप करने की ज़रूरत नहीं थी, जिसने कहा था, ''जिसके पास दो कुरते हों, वह उसके साथ जिसके पास नहीं हैं बांट दे'' (लूका 3:11)। यीशु के पास केवल एक ही कुरता था। तथापि, कुछ सम्पन्नता प्रचारक हमें यह स्वीकार कराने का प्रयास कराते हैं कि यीशु धनी था, क्योंकि उसने ऊपर से नीचे तक बिन सीअन का कुरता पहना था (यूह. 19:23), जिसे धनी लोगों के द्वारा पहना जाता था। हम केवल इतना ही परिणाम निकाल सकते हैं कि यीशु अपने धन को *छिपाने* का प्रयास कर रहा था, क्योंकि उसने *बाहरी* बिन सीअन का कुरता नहीं पहना था।

यीशु के पास धन के बारे में कहने को और भी बहुत कुछ था जिस पर विचार करने का हमारे पास स्थान नहीं है। तथापि, आइये, आधुनिक सम्पन्नता प्रचारकों की कुछ सामान्य शिक्षाओं पर ध्यान दें जो कि पवित्रशास्त्र को घुमाने और भोले-भालों को धोखा देने में माहिर हैं।

''परमेश्वर ने सुलैमान को धनी किया''

"God Made Solomon Rich"

अधिकांश सम्पन्नता प्रचारक अपने लालच के बहाने के लिए इस तर्क का प्रयोग करते हैं। वे यह स्मरण रखने में असफल हो जाते हैं कि परमेश्वर ने सुलैमान को किस कारण से धन दिया था? इसका कारण यह था कि जब परमेश्वर ने सुलैमान से कुछ मांगने को कहा तो उसने लोगों पर शासन करने के लिए बुद्धि की मांग की। परमेश्वर बहुत प्रसन्न हुआ कि सुलैमान ने धन नहीं मांगा (दूसरी चीज़ों के साथ), इसलिए बुद्धि के साथ-साथ उसने उसे धन भी दे दिया। तथापि, सुलैमान ने परमेश्वर प्रदत ईश्वरीय बुद्धि का प्रयोग उस तरह से नहीं किया जैसा परमेश्वर चाहता था, और इसी कारण वह सबसे मूर्ख व्यक्ति बन गया। यदि वह बुद्धिमान होता तो उसने उस पर ध्यान दिया होता जो परमेश्वर ने उसके जन्म लेने के वर्षों पूर्व इस्राएल से कहा था:

> जब तू उस देश में पहुंचे जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है,
> और उसका अधिकारी हो, और उसमें बसकर कहने लगे, कि

> ''चारों ओर की सब जातियों की नाईं मैं भी अपने ऊपर राजा ठहराऊंगा;'' तब जिस को तेरा परमेश्वर यहोवा चुन ले अवश्य उसी को राजा ठहराना। अपने भाइयों ही में से किसी को अपने ऊपर राजा ठहराना; किसी परदेशी को जो तेरा भाई न हो तू अपने ऊपर अधिकारी नहीं ठहरा सकता। और वह बहुत घोड़े न रखे, और न इस मंशा से अपनी प्रजा के लोगों को मिस्र में भेजे कि उसके पास बहुत से घोड़े हो जाएं, क्योंकि यहोवा ने तुम से कहा है, कि तुम उस मार्ग से फिर कभी न लौटना। और वह बहुत स्त्रियां भी न रखे, ऐसा न हो कि उसका मन यहोवा की ओर से पलट जाए; और न वह अपना सोना, रूपा बहुत बढ़ाए (व्यवस्था. 17:15-17)।

यह एक और पद है जिसकी संपन्नता के शिक्षक सुलैमान के समान ही सदैव उपेक्षा करते हैं, जिसने अपने विनाश के लिए इसकी उपेक्षा की थी। उसी के समान, वे मूर्तिपूजक भी बन जाते हैं। स्मरण रखें कि सुलैमान का मन मूर्तिपूजा की ओर उसकी पत्नियों के कारण ही फिरा था, वे पत्नियां जिन्हें वह धन की अधिकता होने पर वहन कर सकता था।

परमेश्वर चाहता था कि सुलैमान अपने परमेश्वर प्रदत्त धन का प्रयोग अपने समान अपने पड़ोसी से प्रेम करने में करे, लेकिन सुलैमान ने इसका प्रयोग स्वयं से प्रेम करने के लिये किया। उसने अपने लिये सोने, चांदी, घोड़ों और पत्नियों की बढ़ोत्तरी की, जो प्रत्यक्ष रूप में परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करना था। उसने अंतत: सात सौ स्त्रियों से विवाह किया और उसकी तीन सौ रखैल थीं; जो कि एक हज़ार पुरुषों की पत्नियों को छीनना था। दरिद्रों को देने की अपेक्षा, सुलैमान ने अपने लिए संचित किया। यह बहुत हैरानी की बात है कि संपन्नता प्रचारक उसके स्वार्थ और मूर्तिपूजा की रोशनी में प्रत्येक नये नियम के मसीही के लिए उसे एक आदर्श के रूप में रखते हैं। क्या हमारा लक्ष्य *मसीह* के समान बनाने का नहीं है?

''परमेश्वर ने इब्राहीम को धनी किया, और इब्राहीम की आशीषों की प्रतिज्ञा हमारे लिए की गई है''

"God Made Abraham Rich, and Abraham's Blessings Are Promised To Us"

इस सामान्य तर्क को पौलुस के शब्दों में गलतियों के तीसरे अध्याय में दिया गया है। मैं अधिकांश समय गलत उद्धृत किये जानेवाले पदों को उद्धृत करूंगा, परन्तु इसके संदर्भ में होकर:

> और पवित्रशास्त्र ने पहले ही से यह जानकर, कि परमेश्वर अन्यजातियों को विश्वास से धर्मी ठहराएगा, पहले ही से इब्राहीम को यह सुसमाचार सुना दिया, ''तुझ में सब जातियां आशीष पाएंगी।'' तो *जो विश्वास करनेवाले हैं, वे विश्वासी इब्राहीम के साथ आशीष पाते हैं।*
>
> सो जितने लोग विश्वास के कामों पर भरोसा रखते हैं, वे सब शाप के आधीन हैं; क्योंकि लिखा है, ''जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हुई सब बातों के करने में स्थिर नहीं रहता, वह शापित है।'' पर यह बात प्रगट हैं कि व्यवस्था के द्वारा परमेश्वर के यहां कोई धर्मी नहीं ठहरता क्योंकि ''धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा।'' पर व्यवस्था का विश्वास से कुछ संबन्ध नहीं; पर जो उनको मानेगा, वह उनके कारण जीवित रहेगा।'' मसीह ने ''जो हमारे लिए श्रापित बना हमें मोल लेकर व्यवस्था के शाप से छुड़ाया क्योंकि लिखा है ''जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह श्रापित है'' *यह इसलिये हुआ कि इब्राहीम की आशीष मसीह यीशु में अन्यजातियों तक पहुंचे,* और हम विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त करें जिसकी प्रतिज्ञा हुई है (गल. 3:8-14, पर बल दिया गया है)।

''इब्राहीम की आशीष'' जिसके बारे में पौलुस ने पद 14 में लिखा, वह परमेश्वर की इब्राहीम द्वारा सभी जातियों को आशीष देने की प्रतिज्ञा थी (जिसके बारे में पौलुस ने पद 8 में उद्धृत किया था), या अधिक विशिष्ट रूप में, जैसा पौलुस ने कुछ पदों के पश्चात् ही स्पष्ट किया था कि, *इब्राहीम के एक ही वंश यीशु में* (गल. 3:16)। जो कुछ हमने अभी पढ़ा उसके अनुसार, यीशु ने परमेश्वर द्वारा श्रापित होने और क्रूस पर संसार के पापों के लिए मरने के द्वारा संसार की सभी जातियों के लिए प्रतिज्ञा की गई आशीष को उपलब्ध कराया। अत: ''अन्यजातियों तक आनेवाली इब्राहीम की आशीषों'' का अर्थ यह नहीं था कि परमेश्वर सभी अन्यजातियों को इब्राहीम के समान धनी बनाने वाला था, बल्कि इब्राहीम के वंश द्वारा सारे संसार की जातियों को आशीष देना था—इसकी पूर्ति यीशु द्वारा उसके लिए क्रूस पर मारे जाने से हुई। (पौलुस का प्रमुख विषय यहां यह है कि अन्यजाति भी यहूदियों के समान यीशु में विश्वास लाने के द्वारा विश्वास से बच सकती हैं)।

दूसरा मोड़

Another Twisting

इसी परिच्छेद का प्रयोग सामान्यता संपन्नता के प्रचारकों द्वारा अपने सिद्धान्त को

उचित ठहराते हुए दूसरे तरीके से किया जाता है। उनका कहना है कि, जो इसे नहीं पूरा करते व्यवस्था उनके लिए दरिद्रता की प्रतिज्ञा करती है (देखें व्यवस्था. 28:30. -31, 33, 38-40, 47-48, 51, 68), और क्योंकि पौलुस ने गलतियों 3:13 में लिखा, ''मसीह ने हमें व्यवस्था के शाप से छुड़ाया'' हम जो कि मसीह में हैं, दरिद्रता के शाप से छुड़ाए गए हैं।

सर्वप्रथम, यह तर्कपूर्ण है कि जिस समय पौलुस ने ''व्यवस्था के शाप'' के बारे में लिखा जिससे मसीह ने हमें छुड़ाया, वह व्यवस्थाविवरण 28 में पाए जाने वाले विशिष्ट शापों के बारे में सोच रहा था। ध्यान दें कि पौलुस ने यह नहीं कहा कि मसीह ने हमें व्यवस्था के शापों (बहुवचन) से छुड़ाया, बल्कि इसके विपरीत ''व्यवस्था के शाप'' (एक वचन)से शायद यह लागू करते हुए कि उन सभी के लिए पूरी व्यवस्था एक श्राप थी जिन्होंने इसका पालन करने के द्वारा उद्धार पाने का प्रयास किया। एक बार मसीह के द्वारा छुड़ाए जाने पर हमें इस भ्रम में नहीं रहना चाहिए कि स्वयं को बचाने के लिए हमें व्यवस्था को मानना है, बल्कि हमें इसके अर्थ को समझना है ''व्यवस्था के श्राप से छुड़ाए गए।''

यदि पौलुस वास्तव में यह कह रहा था कि मसीह ने हमें व्यवस्थाविवरण 28 में वर्णित प्रत्येक विनाशकारी चीज़ से छुड़ाया है, हमारी भौतिक संपन्नता की गारंटी देते हुए; तो हमें हैरानी होगी कि पौलुस ने इस तरह से क्यों लिखा, ''हम इस घड़ी तक भूखे प्यासे और नंगे हैं, और घूंसे खाते हैं, और मारे-मारे फिरते हैं'' (1कुरि. 4:11) हमें इससे भी हैरानी होगी कि पौलुस ने ऐसा क्यों लिखा:

> कौन हमको मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नंगाई, या जोखिम, या तलवार ? जैसा लिखा है, कि ''तेरे लिये हम दिन भर घात किये जाते हैं; हम बध होने वाली भेड़ों की नाईं गिने गए हैं (रोमि. 8:35-36)।

निस्संदेह, यदि सभी मसीहियों को सताव, अकाल, जोखिम, या तलवार से छुटकारा दे दिया गया होता तो पौलुस ने इन शब्दों को न लिखा होता।

हमें इस बात से भी हैरानी होगी कि यीशु ने निम्नलिखित स्वर्गीय दृश्य के बारे में पहले से क्यों बता दिया था:

> तब राजा अपनी दाहिनी ओर वालों से कहेगा, ''हे मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ जो जगत के आदि से तुम्हारे लिए तैयार किया हुआ है। क्योंकि मैं भूखा था, और तुमने मुझे खाने को दिया; मैं प्यासा था, और तुमने मुझे पानी पिलाया; मैं परदेशी था, तुमने मुझे अपने घर में ठहराया; मैं नंगा था, तुमने मुझे कपड़े पहनाए; मैं बीमार था, तुमने मेरी सुधि ली; मैं बंदीगृह में था, तुम मुझसे मिलने आए।'' तब धर्मी उसको उत्तर देंगे कि,

> ''हे प्रभु, हमने कब तुझे भूखा देखा और खिलाया? या प्यासा देखा, और पिलाया, हमने कब तुझे परदेशी देखा और अपने घर में ठहराया या नंगा देखा, और कपड़े पहनाए? हमने कब तुझे बीमार या बंदीगृह में देखा, और तुझसे मिलने आए?'' तब राजा उन्हें उत्तर देगा, ''मैं तुमसे सच कहता हूं कि *तुमने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया वह मेरे ही साथ किया* (मत्ती 25:34-30, पर बल दिया गया है)।

अत: इसमें बहुत कम संदेह है कि ''व्यवस्था के श्राप से छुड़ाए गए'' कुछ विश्वासी स्वयं को संपन्नता से बहुत कम की दशा में पाएंगे। तथापि, ध्यान दें कि यीशु ने बताया कठिन परिस्थितियों में परमेश्वर दुखी विश्वासियों की आवश्यकताओं को पूरा करता है, और वह ऐसा उन अन्य विश्वासियों के द्वारा करता है जिनके पास आवश्यकता से अधिक है। *हम अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सदैव परमेश्वर पर भरोसा कर सकते हैं, चाहे यह अस्थायी ही क्यों न प्रतीत हो।*

अन्तत: संपन्नता के वे प्रचारक जो इब्राहीम के समान धनी होना चाहते हैं, ईमानदारी से प्रश्न करें कि क्या वे अपने पूरे जीवन भर एक तम्बू में बिना बिजली और पानी के रहेंगे। पुराने नियम में परमेश्वर ने जिसे भी धन की आशीष दी, उससे उसने इसे परमेश्वर की महिमा के लिए प्रयोग किये जाने की अपेक्षा की, अपनी बहुतायत में से दूसरों को देते हुए। इब्राहीम ने ऐसा ही किया, सैकड़ों लोगों के लिए रोज़गार उपलब्ध कराते हुए जिससे उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति हुई (देखें गिन. 14:14)। अय्यूब ने भी ऐसा ही किया, और विधवाओं व अनाथों की देख-रेख करने के द्वारा धन का प्रयोग करने के लिए उसे भी परखा गया (अय्यूब 29:12-13; 31:16-22)। वे जिन्हें व्यवसाय में बढ़ने का दान मिला है उन्हें इस बारे में निश्चिंत होना चाहिए कि उनका प्रमुख व्यवसाय परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना और अपने पड़ोसी से अपने समाने प्रेम करने का है।

''पवित्रशास्त्र कहता है कि यीशु इसलिये दरिद्र बना कि हम धनी हो सकें''

"Scripture Says That Jesus Became Poor So That We Could Become Rich"

निश्चय ही बाइबल कहती है:

> तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह जानते हो, कि वह धनी होकर भी तुम्हारे लिये, कंगाल बन गया ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ (2 कुरि. 8:9)।

यह तर्क दिया जाता है कि चूंकि इस पद का संभावित अर्थ यह है कि यीशु स्वर्ग में *भौतिक* रूप में धनी था और वह पृथ्वी पर *भौतिक* रूप में दरिद्र बना, अत: *भौतिक धन* वह है जिसके बारे में पौलुस ने अपने मन में यह विचार करते हुए लिखा कि उसके पाठक मसीह की दरिद्रता से *धनी* होने चाहिए। निश्चय ही उनका कहना है, यदि पौलुस पद के पहले भाग में ''*भौतिक* धन और दरिद्रता के बारे में बोल रहा था तो उसने दूसरे भाग में *आत्मिक* धन के बारे में कहा होता।''

यदि पौलुस का वास्तव में यही अर्थ था कि वह मसीह की भौतिक दरिद्रता के कारण भौतिक रूप में धनी होगा तो हमें हैरानी नहीं होगी कि अपने इसी पत्र में कुछ पदों के बाद उसने ऐसा क्यों लिखा,

> परिश्रम और कष्ट में; बार-बार जागते रहने में; भूख-प्यास में; बार-बार उपवास करने में, जाड़े में; उघाड़े रहने में .... (2कुरि. 11-27)।

यदि 2 कुरिन्थियों 8:9 में पौलुस का अभिप्राय यह था कि मसीह भौतिक रूप में दरिद्र बना तो हम भौतिक रूप से धनी हो सकते हैं, मसीह की मंशा पौलुस के जीवन में ऐसा करने की नहीं थी। अत: पौलुस का यह अभिप्राय *नहीं* था कि मसीह भौतिक रूप से इसलिये दरिद्र बना ताकि इस पृथ्वी पर हम भौतिक रूप से धनी बन सकें। उसका अर्थ था कि हम आत्मिक रूप से धनी बन जाएंगे, ''परमेश्वर की ओर से धनी'' और ''स्वर्ग में धनी'' जहां हमारा धन और मन है।

क्या यह मानना सच में सही है कि चूंकि वाक्य के पहले भाग में पौलुस *भौतिक* धन के बारे में बोल रहा था, अत: वाक्य के दूसरे भाग में उसके द्वारा *आत्मिक* आशीषों के बारे में बोलना संभव नहीं हो सकता, जैसा सम्पन्नता के प्रचारक सामान्यता प्रचार करते हैं? स्मुरना के शहर में अपने कुछ अनुयायियों को यीशु द्वारा कहे जाने वाले शब्दों पर विचार करें:

> मैं तेरे क्लेश और दरिद्रता को जानता हूं (परन्तु तू धनी है) .. .. (प्रका. 2:9अ)।

यीशु स्पष्ट रूप में उस *भौतिक* दरिद्रता के बारे में बोल रहा था जिसका सामना स्मुरना के विश्वासी कर रहे थे, और तब चार शब्दों के पश्चात् वह उन्हीं विश्वासियों के लिए *आत्मिक* धन के बारे में बोल रहा था।

''यीशु ने हमारे देने पर सौ गुणा वापसी की प्रतिज्ञा की है''

"Jesus Promised a Hundred-Fold Return on Our Giving"

यीशु ने बलिदान अथवा त्याग करनेवालों के लिए सौ गुणा वापसी की प्रतिज्ञा की है। आइये पढ़ें कि उसने क्या कहा:

> मैं तुम से सच कहता हूं, कि ऐसा कोई नहीं, जिसने मेरे और सुसमाचार के लिए घर, भाइयों या बहनों, या माता या पिता, या लड़केवालों, या खेतों को छोड़ दिया हो। और अब इस समय सौ गुणा न पाए, घरों और भाइयों और बहनों और माताओं और लड़केबालों और खेतों को पर उपद्रव के साथ और परलोक में अनन्त जीवन (मर. 10:29-30)।

ध्यान दें कि यह प्रतिज्ञा प्रचारकों को धन देने वालों के लिए नहीं है, जैसा दावा सामान्यता संपन्नता के प्रचारकों द्वारा किया जाता है। इसके विपरीत, यह प्रतिज्ञा उनके लिये है जिन्होंने सुसमाचार के प्रचार के लिये अपने घरों, खेतों और संबन्धियों को छोड़ दिया है। यीशु ने इस तरह के लोगों के लिए ''सौ गुणा'' की प्रतिज्ञा की है।

लेकिन क्या यीशु इस बात की प्रतिज्ञा कर रहा था कि इस तरह के लोग सैकड़ों घरों या खेतों के स्वामी हो जाएंगे, जैसा दावा संपन्नता के प्रचारक करते हैं? नहीं, न ही वह यह कह रहा था कि उन्हें सैकड़ों माताएं व सैकड़ों संतानें प्राप्त होंगी, यीशु केवल इतना कह रहा था कि अपने घरों और परिवारों को छोड़ने वाले पाएंगे कि सह- विश्वासी उनके लिए अपने घर को खोलेंगे और उनका स्वागत अपने परिवार के सदस्य के रूप में करेंगे।

ध्यान दें कि यीशु ने इस तरह के लोगों के लिए सताव और अनन्त जीवन की भी प्रतिज्ञा की। यह समस्त परिच्छेद के संदर्भ को हमें स्मरण कराता है, जिसमें शिष्यों ने एक धनी युवा शासक को देखा जो अनन्त जीवन पाना चाहता था, यीशु के द्वारा ऐसा कहे जाने पर वह दुखी होकर चला गया, ''परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है'' (मर. 10:25)।

शिष्य यीशु के इस कथन से स्तब्ध रह गए थे, और परमेश्वर के राज्य में अपने प्रवेश के विषय में हैरान हुए। उन्होंने यीशु को स्मरण कराया कि वे उसका अनुसरण करने को अपने पीछे क्या छोड़ आए थे। उसी समय यीशु ने ''सौ गुणा'' प्रतिज्ञा के बारे में बोला था।

इस तरह से, यह अद्‌वितीय है कि कोई भी संपन्नता का प्रचारक हमें यह समझाने का प्रयास करे कि यीशु सौ गुणा भौतिक वापसी के बारे में बोल रहा था जो कुछ समय में हमें अद्वितीय रूप से धनी बना देगी, इस सच्चाई की रोशनी में कि कुछ सैकेण्ड पहले, यीशु ने एक धनी व्यक्ति को अपना सब कुछ बेचकर उपकार के कार्य में देने को कहा, यदि वह अनन्त जीवन प्राप्त करना चाहता है।

ऐसे और भी बहुत से पद हैं जिन्हें संपन्नता प्रचारक घुमा देते हैं जिनमें से एक पर हमने विचार भी किया है, लेकिन हमारी पुस्तक में स्थान सीमित है। सावधान रहें!

स्मरण रखने के लिए एक सूक्ति
A Maxim to Remember

जौन वैस्ली– इंग्लैण्ड की कलीसिया में मैथोडिस्ट आन्दोलन के संस्थापक ने धन के उपयुक्त दृष्टिकोण के संबंध में एक अद्‌भुत सूक्ति को सिक्के में ढाला। यह है, ''जितना आप कर सकते हैं उसे करें, जितना आप बचा सकते हैं उसे बचाएं; जितना आप दे सकते हैं उसे दें।''

अर्थात्, मसीहियों को सर्वप्रथम कठिन श्रम करना चाहिए, धन कमाने के लिए अपनी परमेश्वर-प्रदत्त योग्यताओं और अवसरों का प्रयोग करते हुए, बल्कि इसे निश्चित करते हुए कि उन्हें मसीह की किसी भी आज्ञा का उल्लंघन किये बिना इसे ईमानदारी से करना है।

दूसरा, उन्हें अपने खर्च कम से कम करते हुए अल्पव्ययी और सरल जीवन जीना चाहिए जो उन्हें इस योग्य करता है कि ''जितना अधिक हो बचा सकें।''

अन्ततः पहले दो चरणों का अनुसरण करने पर उन्हें जितना दे सकते हैं, देना चाहिए, स्वयं को दशवांश के लिए सीमित न करके, बल्कि जितना अधिक हो सके स्वयं का इन्कार करते हुए; जिससे विधवाओं और अनाथों की आवश्यकताओं की पूर्ति हो और सारे संसार भर में सुसमाचार को पहुंचाया जाए।

आरम्भिक कलीसिया ने इस तरह के भण्डारीपन पर कार्य किया था, और नये नियम के जीवन के प्रतिरूप में उन्होंने अपनी चीज़ों को ज़रूरतमंदों के साथ बांटा था। ये प्रथम विश्वासी गंभीरता के साथ यीशु की इस आज्ञा को उसके अनुयायियों तक लेकर गए, ''अपनी संपत्ति बेचकर दान कर दो, और अपने लिए ऐसे बटुए बनाओ, जो पुराने नहीं होते, अर्थात् स्वर्ग पर ऐसा धन इकट्ठा करो जो घटता नहीं और जिस के निकट चोर नहीं जाता, और कीड़ा नहीं बिगाड़ता'' (लूका 12:33)। हम लूका के विवरण में आरम्भिक कलीसिया के बारे में पढ़ते हैं:

> और वे सब विश्वास करनेवाले इकट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएं साझे की थीं। और वे अपनी अपनी सम्पत्ति और सामान बेच-बेच कर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी बांट दिया करते थे। और विश्वास करनेवालों की मण्डली एक चित्त और एक मन के थे यहां तक कि कोई भी अपनी संपत्ति अपनी नहीं कहता था, परन्तु सब कुछ साझे का था.. उन सब पर बड़ा अनुग्रह था। और उनमें कोई भी दरिद्र न था; क्योंकि जिनके पास भूमि या घर थे, वे उनको बेच-बेचकर बिकी हुई वस्तुओं का दाम लाते, और उसे प्रेरितों के पांव पर रखते थे। और जैसी जिसे आवश्यकता

होती थी, उसके अनुसार हर एक को बांट दिया करते थे (प्रेरित. 2:44-45; 4:32-35)।

पवित्रशास्त्र यह भी स्पष्ट करता है कि आरम्भिक कलीसिया ने दरिद्र विधवाओं के लिए भोजन का प्रबन्ध किया (देखें प्रेरित. 6:1; 1तीमु. 5:3-10)।

महान प्रेरित पौलुस को परमेश्वर द्वारा अन्यजातियों तक सुसमाचार को पहुंचाने का कार्य सौंपा गया, जो नये नियम की अधिकांश पत्रियों का लेखक है। दरिद्रों की भौतिक आवश्यताओं की चिन्ता करना उसकी सेवकाई का एक आवश्यक भाग था। कलीसियाओं की स्थापना करने के साथ-साथ पौलुस ने दरिद्र मसीहियों के लिए बड़ी संख्या में धन अर्जित किया (देखें प्रेरित. 11:27-30; 24:17; रोमि. 15:25-28; 1कुरि. 16:1-4; 2 कुरि. 8:9; गल. 2:10)। अपने परिवर्तन के सत्रह वर्ष पश्चात्, पौलुस ने उस सुसमाचार को समर्पित करने के लिए यरूशलेम की यात्रा की जिसे उसने पतरस, याकूब और यूहन्ना के सूक्ष्म परीक्षण से प्राप्त किया था। वह जिस संदेश का प्रचार कर रहा उनमें से किसी ने उसमें कोई गलती नहीं पाई, और पौलुस ने गलतिया के अपने सुअवसर को याद किया, ''केवल यह कहा, कि हम कंगालों की सुधि लें, और इसी काम के करने का मैं आप भी यत्न कर रहा था'' (गल. 2:10)। पतरस, याकूब, यूहन्ना और पौलुस के मनों में, सुसमाचार की घोषणा करने के पश्चात् दरिद्रों के प्रति सहानुभूति का दूसरा स्थान था।

सारांश में

In Summary

इस विषय पर, शिष्य-निर्माता सेवकों के लिए प्रेरित पौलुस की ओर से सबसे अच्छी सलाह आती है, जिसने तीमुथियुस को यह चेतावनी देने के पश्चात् कि ''रुपये का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है'' और यह कहते हुए कि, ''जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए कितनों ने विश्वास से भटककर अपने आप को नाना प्रकार के दुखों से छलनी बना लिया है'' इसके बाद कहा,

''पर हे परमेश्वर के जन, तू इन बातों से भाग; और धर्म, भक्ति, विश्वास, प्रेम, धीरज और नम्रता का पीछा कर'' (1तीमु. 6:11)।